करता हूं कि आपने मुझे एक महत्वपूर्ण विषय पर विशेष उल्लेख के माध्यम से अपने विचार रखने का मौका दिया। महोदया, बर्मा या म्यांमार, भारत का पड़ोसी मुल्क है और भारतवर्ष सबसे बड़ा लोकतांत्रिक मुल्क है। माननीय उपसभापति जी, बर्मा में मानवाधिकारों तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की निरंतर नृशंस हत्या हो रही है और बर्मा के गांधीवादी नेता जनरल आंग सान की हत्या कर दी गई थी। उनकी पुत्री, जो बर्मा की बेटी के नाम से जानी जाती है, 20 जुलाई, 1989 से रंगून में नजरबन्द है। इस नजरबंदी को करीब-करीब 4 वर्ष पूरे हो चुके हैं।

महोदया, आंग सान सू ने बर्मा में लोकतंत्र की बहाली की लड़ाई लड़ी और जनता के दबाव के कारण वहां पर जो सैनिक शासन था, उसको मई, 1990 में चुनाव कराना पड़ा और 27 मई, 1990 में जो नेशनल असेम्बली थी उसके आम चुनाव हुए और चुनाव के बाद आंग सान सू की नेशनल लीग फार डेमोक्रेसी पार्टी को भारी बहुमत मिला और कुल वोटों का 66 प्रतिशत उनको मिला लेकिन सैनिक शासन ने सत्ता हस्तांतरण से इनकार कर दिया और उनको नजरबंद कर दिया।

महोदया, उनको नोबल शांति पुरस्कार मिल चुका है और 1992 में युनाइटेड स्टेट्स फ्रीडम हाऊस ऐवार्ड और 1992 में ही साईमन बोलिवर ऐवार्ड मिला। महोदया, मेरी जानकारी के हिसाब से बर्मा में इस समय करीब-करीब 10 लाख भारतीय मूल के लोग रह रहे हैं। मैं सदन को याद दिलाना चाहता हूं कि बर्मा वह स्थान है जहां से आजाद हिंद रेडियो से प्रसारित एक भाषण में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने पहले-पहल महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता का संबोधन दिया था। यह घटना 7 जुलाई, 1944 की है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस उन दिनों वहां अंतरिम सरकार चला रहे थे। उन्होंने उस समय आजाद हिंद रेडियो से अपने प्रसारण में कहा था कि—

"भारत की आजादी की आखिरी जंग छिड़ गई है। आजाद हिंद फौज की टुकड़ियां भारत की धरती पर बहादुरी से लड़ रही हैं और तमाम कठिनाइयों और रुकावटों के बावजूद वे धीमे-धीमे ही सही पर निश्चित दिशा में आगे बढ़ रही हैं। यह सशस्त्र संघर्ष तब तक चलता रहेगा, जब तक भारत से आखिरी अंग्रेज भगा नहीं दिया जाएगा। यह संघर्ष तब तक चलता रहेगा, जब तक नई दिल्ली के वायसराय हाऊस पर हमारा तिरंगा गर्व से नहीं लहरा उठेगा।

हमारे राष्ट्रपिता भारतीय स्वाधीनता के इस धर्म युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभकामनायें चाहते हैं"।

माननीय उपसभापति जी, हमारे पड़ोसी मुल्क में इस तरीके से वहां पर आम चुनाव हों और जिस पार्टी का बहुमत सिद्ध हो उसके नेता को नजरबन्द रखा जाए, यह ठीक नहीं है। मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहूंगा कि वह बर्मा सरकार पर दबाव डाले कि बर्मा में लोकतंत्र की बहाली हो और आंग सान सू को रिहा किया जाए और उनको सत्ता हस्तांतरण किया जाए और मानवाधिकारों की रक्षा हो।

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): Madam, I associate myself with the views expressed by Mr. Satya Prakash Malaviya.

Difficulties being faced by people at Regional Passport Office, Lucknow (U.P.)

श्री मुहम्मद मसूद खान (उत्तर प्रदेश): मुअतरिमा डिप्टी चेयरमैन साहिबा, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान एक बहुत ही अहम मसले की तरफ दिलाना चाहता हूं। उत्तर प्रदेश में लखनऊ में रीजनल पासपोर्ट आफिस है। इसमें कोई शुबहा नहीं कि सरकार ने पासपोर्ट की फीस तो बढ़ा दी, लेकिन उसके बाद यह नहीं देखा कि पासपोर्ट बनवाने वालों को कितनी कठिनाई होती है। सी०आई०डी० की जांच की जाती है और सी०आई०डी० वाले बहुत ही उत्पीड़न करके एक हजार

[श्री मुहम्मद मसूद खान]

से कम लेने के बाद ही कोई रिपोर्ट उसके फेवर में लिखते हैं वरना नहीं लिखते हैं। दूसरे जब वह आदमी लखनऊ पासपोर्ट आफिस में आता है तो उसकी जो स्लिप होती है जिस पर वह वाकफियत हासिल करना चाहता है उस का सही जवाब नहीं देते और पासपोर्ट आफिस का स्टाफ अनअथोराइज्ड एजेन्ट से मिल करके एक पासपोर्ट का 5 हजार से 10 हजार रुपए तक लेते हैं और तब जाकर किसी का पासपोर्ट बन पाता है। दूसरे देशों में भी पासपोर्ट का सवाल रहता है, लेकिन वहां एक पासपोर्ट 10 साल के वास्ते बनता है। 5 साल उसकी मियाद रहती है। फिर एक्सटेंशन होता है और एक्सटेंशन विदइन 24 आवर में या उसी दिन मिल जाता है। यहां एक्सटेंशन की दर्खास्त दी जाय तो वही प्रक्रिया है। एक हजार रुपए सी.आई.डी. को देने पड़ते हैं। 5 हजार से 10 हजार रुपए जो इनका स्टाफ है उसको देना पड़ता है। मेरा एक सुझाव है, अगर ये काम करें तो शायद रुक सकता है। इनके पास एक रजिस्टर होता है जिस रजिस्टर पर एप्लीकेशन दर्ज की जाती है। लेकिन इनका स्टाफ बेईमानी के ख्याल से उस रजिस्टर को भरता नहीं है। जिससे 10 हजार रुपए मिल गये उसकी एन्ट्री पहले करके उसका पासपोर्ट दे देता है और जिसका पैसा नहीं मिलता है उसका तीन महीने से लेकर 6 महीने तक भी नहीं बनता है और यहां तक कि हम लोगों को लिखना पड़ता है और तब भी जल्दी नहीं होती। इसके पहले जो सरकारें थीं उसमें एम०पी० और एम० एल० ए० की वजह से पासपोर्ट बन जाता था, लेकिन अब खत्म कर दिया गया है। खत्म करने के पीछे क्या उद्देश्य है वह समझ में नहीं आया सी० आई० सी० वाले नाजायज पैसा कमवाने के लिए कोई क्रिमिनल आदमी सी० आई० डी० को पैसा दे देगा तो उसका पासपोर्ट बन जाता है। एक भी मिसाल यह भारत सरकार दे सके तो दे, जिसका पासपोर्ट नहीं बनना चाहिए उसने पैसा खर्च किया है तो उसका पासपोर्ट नहीं बना हो। मैं आपके माध्यम से सरकार से गुजारिश करना चाहता हूं कि यह जो उत्पीड़न उन लोगों का हो रहा है जो पासपोर्ट बनने के बाद दूसरे देशों में जाते हैं उसको रोकने का प्रयास किया जाय। इससे दो फायदे इस मुल्क को होते हैं। यहां मुलाजमत नहीं मिलती है। बाहर से वे पैसा भेजते हैं। वह पैसा यहां मिलता है। ऐसे लोग पासपोर्ट बनाने के लिए इतने उत्पीड़न का सामना करते हैं, यह मेरे ख्याल में नाआकबत अंदेश सरकार ही हो सकती है, मुल्क की बहिख्वाह सरकार नहीं हो सकती है। मैं इस सरकार से फिर गुजारिश करना चाहता हूं कि वह इसको देखे और किसी आदमी का नाजायज पैसा अगर खर्च होता है तो उसके खर्च को कैसे रोका जा सकता है। उसका एक मियाद के अन्दर कैसे पासपोर्ट बन जाय, यह किया जाना चाहिए और एक्सटेंशन उसी दिन मिल जाना चाहिए। उसके वास्ते सी० आई० डी० वगैरह की जरूरतनहीं है।

شری محمد مسعود خاں (اتر پردیش): محترمہ ڈپٹی چیرمین صاحبہ۔ میں آپ کے مادھیم سے سرکار کا دھیان ایک بہت ہی اہم مسئلہ کی طرف دلانا چاہتا ہوں۔ اتر پردیش میں لکھنؤ میں ریجنل پاسپورٹ آفس ہے اس میں کوئی شبہہ نہیں کہ سرکار نے پاسپورٹ کی فیس تو بڑھادی لیکن اس کے بعد یہ نہیں دیکھا کہ پاسپورٹ بنوانے والوں کو کتنی کٹھنائی ہوتی ہے۔ سی۔ آئی۔ ڈی۔ کی جانچ کی جاتی ہے اور سی۔ آئی۔ ڈی والے بہت ہی انٹیمیڈیٹ کرکے ایک ہزار سے کم لینے کے بعد ہی کوئی رپورٹ اسکے فیور میں لکھتے ہیں ورنہ نہیں لکھتے ہیں۔ دوسرے جب وہ آدمی لکھنؤ پاسپورٹ آفس میں آتا ہے تو اس کی جو سلپ ہوتی ہے جس پر وہ واقفیت

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

آدمی سی۔ آئی۔ ڈی کو پیسہ دے دیگا تو اس کا پاسپورٹ بن جاتا ہے۔ ایک بھی مثال یہ بھارت سرکار دے سکے تو دے۔ جسکا پاسپورٹ نہیں بننا چاہیے اس نے پیسہ خرچ کیا ہے تو اس کا پاسپورٹ نہیں بنا ہو۔ میں آپکے مادھیم سے سرکار سے گذارش کرنا چاہتا ہوں کہ یہ جو اتپیڑن لوگوں کا ہو رہا ہے جو پاسپورٹ بننے کے بعد دوسرے دیشوں میں جاتے ہیں اس کو روکنے کا پریاس کیا جائے۔ اس سے دو فائدے اس ملک کو ہوتے ہیں۔ یہاں ملازمت نہیں ملتی ہے۔ باہر سے وہ پیسہ بھیجتے ہیں۔ وہ پیسہ یہاں ملتا ہے۔ ایسے لوگ پاسپورٹ بنانے کیلئے اتنے اتپیڑن کا سامان کرتے ہیں یہ میرے خیال میں ناعاقبت اندیش سرکار ہی ہو سکتی ہے ملک کی بہی خواہ سرکار نہیں ہو سکتی ہے۔ میں اس سرکار سے پھر گذارش کرنا چاہتا ہوں کہ وہ اس کو دیکھے اور کسی آدمی کا ناجائز پیسہ اگر خرچ ہوتا ہے تو اس کے خرچ کو کیسے روکا جا سکتا ہے اس کا ایک معیاد کے اندر کیسے پاسپورٹ بن جائے یہ کیا جانا چاہیے اور ایکسٹینشن اسی دن مل جانا چاہیے۔ اس کے واسطے سی۔ آئی۔ ڈی وغیرہ کی ضرورت نہیں ہے۔

"ختم شد"

حاصل کرنا چاہتا ہے اس کا صحیح جواب نہیں دیتے اور پاسپورٹ آفس کا اسٹاف ان انٹرائزڈ ایجنٹ سے ملکر کے ایک پاسپورٹ کا ۵ ہزار سے ۱۰ ہزار روپے تک لیتے ہیں اور تب جاکر کسی کا پاسپورٹ بن پاتا ہے۔ دوسرے دیشوں میں بھی پاسپورٹ کا سوال رہتا ہے لیکن وہاں ایک پاسپورٹ ۱۰ سال کے واسطے بنتا ہے ۵ سال اس کی معیاد رہتی ہے پھر ایکسٹینشن ہوتا ہے اور ایکسٹینشن دو ان ۲۴ آورس میں یا اسی دن مل جاتا ہے۔ یہاں ایکسٹینشن کی درخواست دی جائے تو وہی پر کریہ ہے۔ ایک ہزار روپیہ سی۔ آئی۔ ڈی کو دینے پڑتے ہیں۔ ۵ ہزار سے ۱۰ ہزار روپے جو انکا اسٹاف ہے اس کو دینا پڑتا ہے۔ میرا ایک سجھاؤ ہے اگر یہ کام کریں تو شاید روک سکتا ہے۔ انکے پاس ایک رجسٹر ہوتا ہے جس رجسٹر پر اپلیکیشن درج کی جاتی ہے۔ لیکن ان کا اسٹاف بے ایمانی کے خیال سے اس رجسٹر کو بھرتا نہیں ہے۔ جس سے دس ہزار روپے مل گئے اس کی انٹری پہلے کر کے اس کا پاسپورٹ پہلے دے دیتا ہے۔ اور جس کا پیسہ نہیں مل پاتا ہے اس کا تین مہینے سے لے کر چھ مہینے تک بھی نہیں بنتا ہے۔ اور یہاں تک کہ ہم لوگوں کو لکھنا پڑتا ہے اور تب بھی جلدی نہیں ہوتی۔ اس کے پہلے جو سرکاریں تھیں اس میں ایم۔ پی اور ایم۔ ایل۔ اے کی وجہ سے پاسپورٹ بن جاتا تھا لیکن اب ختم کر دیا گیا ہے۔ ختم کرنے کے پیچھے کیا ادیشے ہے وہ سمجھ میں نہیں آیا۔ سی۔ آئی۔ ڈی والے ناجائز پیسہ کمانے کیلئے کوئی کرمنل

[ ]Transliteration in Arabic Script.

उपसभापति : मिनिस्टर साहब यहां पर बैठे हुए हैं।

The Minister of State for External Affairs will take care of the matter is being raised here.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SALMAN KHURSHEED): Madam, we will take note of what the hon. Member has satd. Our effort has been to streamline and to make or passport offices efficient and convenient for all people using them. We are replying as much as possible and computerisation so that the subjective element is removed. A lot more needs to be done. Some new legislation has also come in handy which allows for giving the passports without police verification if it is not available within a month. And thereafter verification or confirmation of that passport can be done. But whatever suggestions have come from the hon. Member, I will pass them on to my colleague, Mr. Bhatia, who is directly in charge of passports. We will surely do whatever is necessary to ensure that passports are given more conveniently.

उपसभापति : मिनिस्टर साहब ने बहुत कुछ अच्छा आश्वासन दे दिया है।

श्री अनन्त राम जायसवाल : (उत्तर प्रदेश) : जो विषय श्री मुहम्मद मसूद खान जी ने उठाया है उसके साथ अपने आप को जोड़ते हुए यह निवेदन करना चाहता हूं कि पूरे जोर के साथ इस विषय को न मालूम कितनी बार मैंने उठाया है और कितनी ही चिट्ठियां प्रधान मंत्री से लेकर विदेश विभाग में जितने मंत्री हैं सब को लिखे हैं। चाहे दिल्ली का पासपोर्ट आफिस हो, चाहे कोई भी रीजनल पासपोर्ट आफिस हो।

जितना वक्त पहले पासपोर्ट मिलने में लगता था उससे दुगुना समय आज लग रहा है। इसलिए मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि वे खाली आश्वासन मत दें, इस ओर उनका ध्यान खींचने के लिए जो सवाल किये गये हैं, जो चिट्ठियां लिखी गई हैं, उनका क्या हुआ, उसको देखें और इसको सुधारें।

श्री राम रतन राम : (उत्तर प्रदेश) : मैं मसूद साहब ने जो कहा है उससे अपने को असोसियेट करता हूं और आपके माध्यम से सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि लखनऊ पासपोर्ट आफिस करप्शन का अड्डा बना हुआ है। बगैर मेडीयिटर वहां पर पासपोर्ट नहीं मिलता। अभी हाल ही में पत्रकारों ने इसके एजेंट का फोटो लेने की कोशिश की तो उनके साथ मारपीट करने की कोशिश की गई। पासपोर्ट आफिसर ने जब प्रेस में माफी मांगी जब जाकर मामला सुलझा... (**व्यवधान**)...लखनऊ में। मैं लखनऊ की बात कर रहा हूं। वहां पर बगैर एजेंट के कोई भी पासपोर्ट नहीं बन पा रहा है और वहां पर गरीब आदमियों को तकलीफ हो रही है। इस ओर मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

Rail Need to allocate more funds for Rail gauge conversiin in Tamil Nadu

SHRI J. S. RAJU (Tamil Nadu): I wish to draw the attention of the Government towards the height of neglect meted out to Tamil Nadu by the Indian Railways. Central Government has done very little to improve the Railway network in Tamil Nadu.

There is a total of 1,09,338 kms. long railway line in India out of which 72,935 kms consist of broad gauge. Whereas in the entire Tamil Nadu there is just 4010 kms railway line laid by the Britishers, there is hardly a few hundred kms long broad gauge line in the entire State. The rest is metre gauge and also narrow gauge at some stretches of Western Ghats.

There are two major railway lines in Tamil Nadu. One is the main line from Madras Egmore to Trichy via Tanjore and the other is the cord